मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति

पं. रवि”ांकर शुक्ल वि”वविद्यालय रायपुर के कला संकाय अन्तर्गत हिन्दी में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध की रूप रेखा

सत्र – 2014

भाोध–रूपरेखा

निर्दे”ाक

डॉ. शंकरमुनि राय

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शास. दिग्विजय स्नातकोत्तर स्व”ाासी

महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

शोध छात्र

मुके”ा कुमार टेम्भुरकर

– शोध केन्द्र –

शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर स्व"ाासी महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	पूर्वानुसंधान के कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा एवं विषय से सम्बंधित	1
2.	शोध कार्य	2
3.	प्रस्तावना	3–4
4.	विषय की व्याख्या	4–6
5.	शोध विषय की व्याप्ति एवं विषय का कार्यक्षेत्र	6–10
6.	शोध सामग्री की उपलब्धतता	10
7.	शोध का प्रायोजन उपादेयता	10–11
8.	शोध का उद्‌दे"य	11–13
9.	प्रस्तावित शोध प्रबंध का अध्यायवार वर्गीकरण	13–15
10.	उपसंहार	15–16
11.	परि"ाष्ट –	16–21
	क. आधार ग्रन्थ	
	ख. सहायक ग्रन्थ	
	ग. पत्र–पत्रिकाएँ	

पूर्वानुसंधान के कार्यो की संक्षिप्त समीक्षा

मुक्तिबोध के काव्य को लेकर अनेक शोध कार्य हुऐ हैं और विद्वानों ने मुक्तिबोध की कविता को लेकर गंभीरता पूर्वक विचार विम"ा भी किया है।

पं. रवि शंकर शुक्ल वि"वविद्यालय में उनके संबंध में जितने भी शोध कार्य सम्पन्न हुऐ हैं, उनमे कविता के प्रतीक, बिम्ब, भाषा शैली में ही हुऐ हैं। इनके अलावा उनके पत्र साहित्य पर भी कार्य हुऐ हैं।

मुक्तिबोध मूलतः कवि थे। लेकिन इनके कहानीकार का कद भी छोटा नहीं था। किन्तु मुक्तिबोध के कवि रूप को ही मान्यता मिली और इनके अन्य साहित्यिक रूप अभी तक अलक्षित ही बने रहे। कहानीकार मुक्तिबोध को तो लगभग उपेक्षणीय मान लिया गया है, इनको कहानियों पर अभी तक स्वतंत्र रूप से कोई काम नही हुआ हैं और छिटपुट रूप से जो कछ लिखा गया वह नितांत अपर्याप्त और असंतोष जनक है।

निर्ष्कषतः इनकी काव्य यात्रा आर कथा यात्रा दो समान्तर रूप में प्रवाहित होती रही है, जितनी ख्याति उन्हें काव्य लेखन से प्राप्त हुई, उतनी ही ख्याति के हकदार वे कथा साहित्य के क्षेत्र में भी हैं।

अतः इनके कथा साहित्य का उचित और निष्पक्ष मूल्याकंन करने की आव"यकता है।

विशय से संबंधित पूर्व भाोध कार्य –

क्रं.	शोध का नाम	शोधार्थी का नाम	सत्र वि.वि.का नाम
1.	समकालीन संदर्भ में मुक्तिबोध की कविता और चिंतन का मूल्यांकन	– सुधा अग्रवाल	– 1982 पं.र.वि.वि.रायपुर
2.	मुक्तिबोध के साहित्य में मानव व्यक्तित्व अवधारणा की और स्वरूप	– राधा नायडू	– 1982 पं.र.वि.वि.रायपुर
3.	समकालीन काव्य की मानीय प्रतिबद्धता के संदर्भ मे मुक्तिबोध के काव्य में अनु”ीलन	– अमरे”ाचन्द्र	– 1982 पं.र.वि.वि.रायपुर
4.	मुक्तिबोध की काव्य भाषा का शेली वैज्ञानिक अध्ययन	–मंजू श्रीवास्तव	– 1984 पं.र.वि.वि.रायपुर
5.	मुक्तिबोध के साहित्य के प्रयुक्त पत्रों का मनोवैज्ञानिक अनु”ीलन	–संध्या दुबे	– 1987 पं.र.वि.वि.रायपुर,
6.	मुक्तिबोध के काव्य में बिम्ब विधान अनु”ीलन	–माधवी श्रीवास्तव	– 1988 पं.र.वि.वि.रायपुर
7.	हिन्दी पत्र साहित्य के संदर्भ में मुक्तिबोध के पत्र साहित्य का अनु”ीलन	–ममता पानपोली	– 1988 पं.र.वि.वि. रायपुर
8.	मुक्तिबोध का काव्य चिंतन एक मूल्यांकन	–देवानंद बोरकर	– 2009 पं.र.वि.वि.रायपुर
9.	मुक्तिबोध तथा विनोद कुमार मिश्र की लंबी कविताओं का अनु”ीलन	–सुजे”ा कुमार शर्मा	– 2012 पं.र.वि.वि.रायपुर

मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति

प्रस्तावना :–

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों में गजानन माधव मुक्तिबोध का वि"ाष्ट स्थान है। उन्होंने केवल हिन्दी कविता ही नही अपितु हिन्दी कहानी उपन्यास, समीक्षा, संस्मरण, डायरी, पत्र संवाद जैसी कई विधाओं में अपनी कु"ाल लेखनी का परिचय दिया है। 'तार सप्तक' से लेकर 'काठ का सपना' और 'विपात्र' तक उन्होंने एक लम्बी साहित्यिक यात्रा सम्पन्न की।

मुक्तिबोध बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। एक ओर जहाँ हिन्दी नयी कविता धारा की एक नयी दृष्टि एवं नयी सृष्टि प्रदान करने में उनका अग्रणीय योगदान है, दूसरी ओर सौन्दर्य"ाास्त्र को परिभाषित करने एवं प्रतिष्ठित करने में पीछे नही रहे। नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध एवं कामायनी एक पुनर्विचार इसके साक्षात प्रमाण ह, इसी तरह कथा साहित्य का क्षेत्र भी इनसे अधूरा नही रहा।

इनकी कहानी की रचना शीलता के दो दौर है– प्रथम दौर में इनकी प्रारंभिक कहानियां परिगणित की गई हैं। यह दौर 1936 से 1942 तक का है। इस दौर में मुक्तिबोध को विचारधारा निरन्तर विकासमान अवस्थाओं से गुजर रही थी और तद्अनुकुल उनकी भावधारा और उनकी संवेदना का स्वरूप भी निरंतर गति"ाील होकर आकार ग्रहण कर रहा था।

दूसरा दौर उनकी प्रौढ़ रचनात्मकता का है। इस दौर को 1948 से 1963 तक की अवधि में बांध सकते है। यह दौर उनकी मार्क्सवादी विचारधारा से अनु"ाासित और अनुप्रमाणित रचना शीलता का है। यद्यपि इनकी कहानियों की संख्या काफी कम है इनकी प्रका"ात कहानियों की की संख्या 47 है जिनमें 25 पूर्ण और 22 अपूर्ण हैं। उपन्यासों में वर्ग विहिन समाज की स्थापना की लक्ष्य मानकर काठ का सपना, विपात्र और 'सतह से उठता आदमी' का सृजन किया गया हैं।

जीवन में आये संघर्षो और तनावों को परिवे"ा की समग्रता में इतिहास क्रम के बीच रखकर देखने और वि"लेषित करने का दायित्व हिन्दी कहानीकार ने सन 1936 के आसपास विकसित होती हुई प्रगति"ील चेतना के साथ ही समझना प्रारम्भ कर दिया था और यथार्थ परक कहानियॉ लिखी जाने लगी थी। उनका रचना काल वि"व में साम्राज्यवादी और समाजवादी शक्तियों के वैचारिक संघर्ष के तीव्र होने का समय हैं।

वे अपने परिवे"ा की पीड़ा के द"ांक नही, भोक्ता थे। बदलते हुए परिव"ा में संयुक्त परिवार की इमारत में दरारें पड़ी, नगरों, कस्बो और गांवों के जीवन के सपने टूटे। परिवारिक संबन्ध टूटे, यांत्रिक जीवन में मूल्य बदले, सामान्य जीवन के संदर्भ बदल गये और आर्थिक दृष्टि से असहाय हुये मध्यवर्ग की पीड़ा, गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार का फैलाव हुआ। इन्हीं सबके बीच मुक्तिबोध की कहानियां जीवन की कटुता और विषाक्तता और इनसे मुक्त होने की छटपटाहट लेकर आई, जिनका आधार द्वन्दनात्मक भौतिकवादी द"ान मार्क्साय समाजवादी दृष्टि थी।

विशय की व्याख्या :–

पूंजीवादी सामज के प्रथम चरण में कहानियों की विषय वस्तु में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला। पतन"ील सामान्तीय व्यवस्था का पर्दाफा"ा, चर्च और मठो के भ्रष्टाचार तथा सामान्तीय मान–मूल्यों की सड़ाध पर कसकर प्रहार किए, यूरोप में इस दौर में श्रेष्ठ कहानियां लिखी गई। इसके साथ–साथ इस दौर की कहानियों में नई रचना शीलता के आवेग के कारण जिज्ञासा, कल्पना की ऊंची उड़ान, सहास, रहस्य और रोमांच आदि का प्राचर्य भी दृष्टिगोचर हुआ।

पूंजीवादी समाज के ह्रासकाल में जब इसकी प्रगति"ील भूमिका समाप्त हो गई और इसकी विकृतियां सतह पर आ गयी, तब इस व्यवस्था का पर्दाफा"ा करने वाली कहानियां लिखी गई जो भविष्योन्मुखी थी। जिनकी आस्था समाजवादी समाज व्यवस्था में थी अथवा जिन्हे समाजवादी विचारधारा में आस्था न थी लेकिन वे भेदग्रस्त और विषमताग्रस्त समाज के घोर विरोधी थे वे भी पूंजीवाद विरोध आस्था के रचनाकार थे।

भारत में पूंजीवाद का विकास साम्राज्यवाद की छत्रछाया में सामान्तवाद के सहयोग से हुआ। आज भी मुख्य अन्तर्विरोध–साम्राज्य–सामान्तवाद और भारतीय जन गण के बीच हैं इसलिए जनवाद की भूमिका अभी प्रासगिक है किन्तु इस दौर में जनवाद का विकास मार्क्सवाद की छत्रछाया में ही संभव है। अतः आज क्रांतिकारी जनवादी यथार्थवाद की प्रासंगिकता है, हिन्दी कहानी इस दायित्व के निर्वहन में संलग्न है।

मुक्तिबोध ने पूंजीवादी समाज व्यवस्था की तीव्र आलोचना की है। इस व्यवस्था को वे भयानक एवं मानव के समुचित विकास में बाधक मानते ह। मुक्तिबोध के अनुसार इस व्यवस्था में स्थिति रक्षा के लिए संघर्ष में मनुष्य की जीवन शक्ति का अपव्यय होता है उसे अपने निजत्व के विकास के अवसर नही मिलते और पीड़ादायक संघर्षो द्वारा मन बूझ जाता है। मनुष्य अपनी अस्तित्व रक्षा के आर्थिक, भौतिक संघर्ष एवं तत्तसम्बंधी चिन्ताओं में ही उलझा रहता है, वह निर्माण एवं सृजन के कार्यो में लगकर समाज की प्रगति में अपना समुचित सहयोग नही दे पाता है। मुक्तिबोध सबके व्यक्तित्व का विकास, उन्नति के विकास के समान अवसर मिल सके और इसके लिए वह इस भयानक आर्थिक उत्पीड़न और शोषण मूलक भयानक पूंजीवादी व्यवस्था का समाप्त होना आव"यक मानते ह।

मुक्तिबोध पूंजीवादी व्यवस्था का घोर विरोध करते ह। यह व्यवस्था मानवता का, सत्य का गला घोटकर, असत्य को अवसरवाद को प्रश्रय देती है, जन–जन का शोषण दमन ही उसकी नीति है, बड़े–बड़े साहित्यकार, कलाकार राजनीतिज्ञ इसके ि"ाकंजे में है और थोड़ी सी सुविधाएं प्राप्त करने के लिए अपने आद"ाों को भुला देते ह, अपने आपको शोषकों के हाथ बेच देते हैं।

मुक्तिबोध इस पूंजीवादी व्यवस्था को नष्ट हुआ देखना चाहते ह इस शोषण की कारा को सर्वहारा वर्ग (श्रमिक वर्ग) ही तोड़ सकता है और मानवता को मुक्त करा सकता है।

पूंजीवादी विकृत व्यवस्था की वास्तविकता एवं धर्म का वह स्वरूप भी जन सामान्य के सम्मुख स्पष्ट हो जाएगा। जिसकी आड़ में धनी अधिक धनवान और निर्धन और अधिक–निर्धन होते चले जाते है।

मुक्तिबोध का तात्पर्य यह है कि पूंजीवादी व्यवस्था में द"ान की अकाल मृत्यु हो जाती है, धर्म का स्वरूप विकृत होकर शोषण को प्रश्रय देने लगता है और नैतिकता का ह्रास हो जाता है। इस व्यवस्था में राजनैतिक, धार्मिक, वैचारिक एवं नैतिक समस्त प्रकार के मूल्य और सत्य भूमिस्थ हो जाते हैं, अंधेरे में विलीन हो जाते हैं इस व्यवस्था की, जो शोषण प्रश्रय देती है, बदलना होगा और इसे बदलने के लिए अर्थविहिन व्यवस्था का अंत करने के लिए अंधेरे में छिपाये गये, उपेक्षा की कूड़े–कचरे के ढेरों में फेकें गए उन जीवन मूल्यों आत्म सत्यों की उदभासित करना होगा जिनसे ज्ञान का प्रका"ा फैलेगा, नई चेतना जागृत होगी जो इस व्यवस्था के अत्याचारों के विरूद्ध एक व्यापक जनक्रान्ति को जन्म देगी।

मुक्तिबोध ने पूंजीवाद के भविष्य के स्वरूप को देख लिया था। इसलिये अपने कथा साहित्य में पूंजीवाद के हिंसक रूप को उजागर किया है यह वहीं पूंजीवाद है जो मजदूरों किसानों की ला"ा पर बैठकर गिद्धभोज कर रहा है।

मुक्तिबोध की रचनाओं में भारत की पूंजीवादी समाज व्यवस्था के जन विरोधी स्वभाव और उसके अमानवीय रूपों का बार–बार चित्रण हुआ है। उनकी कथा साहित्यों में पूंजीवादी शासन व्यवस्था का भयंकर दमनकारी रूप उभरकर सामने आता है। इस शासन व्यवस्था के शोषण और अन्याय के खिलाफ जनता का विरोध जब अधिक शक्ति"ाली रूप में प्रकट होता है तो उसके दमन के लिए राज सत्ता अधिक खूँखार हो जाती है। मुक्तिबोध की कथा साहित्य प्रायः प्रक्रिया भी है इसका प्रतिफल भी।

पूंजीवादी संस्कृति के दोगले स्वभाव के प्रति उनकी ग्लानि और घृणा से उपजी भर्त्सना को उजागर करती है।

<u>भाोध विशय की व्याप्ति एवं विशय का कार्य क्षेत्र</u>

गजानन माधव मुक्तिबोध के कहानियों में साराकथ्य निम्न वर्गीय उत्पीड़न के इलाके में पूंजीवादी की चालक साजि"ाों की पहचाचने में फैला पड़ा हैं। प्रारम्भ में साहित्य में नारी के प्रति जो रूढ़िवादी, सौन्दर्य वादी दृष्टिकाण था। उसके विपरीत यथार्थ के

धरातल पर उसके अन्दर की विव”ाता, भावनाओं का चित्रण, शोषित ि”ा”ु, शोषित जन समुदाय का साथ देते हुए, उसकी तरफ से समस्त सामन्तवादी, पूंजीवादी व्यवस्था के विरूद्ध मुक्तिबोध खड़े होते है, पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण की मुक्तिबोध भोगा था।

निम्न पूंजीवादी वर्ग के नाते मध्य वर्ग के कई संस्तर होते है। भौतिक उत्पादन, बौद्धिक उत्पादन और व्यवस्था संचालन क कार्यो में व्यस्त इस वर्ग की कई–कई कोटियॉ होती है। मध्य वर्ग का ऊपरी हिस्सा बुर्जुआ वर्ग के अधिक निकट होता है और नीचे का हिस्सा सर्वहारा वर्ग के अर्थात अमीर, मध्य वर्ग और गरीब मध्य वर्ग के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है। मुक्तिबोध मध्यवर्ग को उच्च वर्ग आर निम्न मध्यवर्ग में विभक्त करते हैं।

पूंजीवादी व्यवस्था में बुद्धिजीवी वर्ग के सदस्यों में वृद्धि सम्पतिधारी वर्गो से होती हैं। राजकीय और निजी स्वामित्व के प्रबंधकीय कार्मिकों के ऊपरी हिस्से के और उच्च वेतन पाने वाले वैज्ञानिकों अभियंताओं प्राध्यपको, नौंकर”ाहों, पत्रकारों, अधिवक्ताओं, न्यायधी”ाों तथा पूंजीवादी जनतंत्र से जुड़े नेताओं सांस्कृतिक कर्मियों, सिनेकारों, अभिनेताओं और साहित्यकारों के शेयर बड़े–बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों में होते है। ये समुदाय मेहनतक”ा लोगों के शोषण में साक्षीदार होते है। शोषक वर्ग से जुड़े इस बुद्धिजीवी वर्ग का वर्ग चरित्र प्रतिक्रियावादी होता है। यह वर्ग श्रमजीवी जनता के शोषण दोहन और उत्पीड़न के नए–नए तरीके ईजाद करता है और जनगण की मुसीबतें को दिन दूना और रात बढ़ाते जाने में अपनी अहम भूमिका निभाता है।

मध्यवर्ग के बुद्धिजीवी समुदाय का एक वर्ग सचेतन रूप में पूंजीवादी व्यवस्था का संप्रेषक नही होता। लेकिन अचेतन रूप से उसकी भूमिका भी जन विरोधी बनी रहती है। 'ब्रम्हराक्षस' इसी कोटी की बुद्धिजीवी है। मजदूर किसान वर्ग का भी आवयविक बुद्धिजीवी समुदाय होता है। इसकी आमद मध्यवर्ग बाद्धिक वर्ग से होता है। यह प्रतिबद्धता पूर्ण तरीके से अपने दायित्वों का निर्वाह और कार्यो का कार्यान्वियन तभी सुचारू रूप से कर पाता है जबकि सायास पूर्वक अपने को वर्ग पसारित (डिम्लास) करता चले मुक्तिबोध का साहित्य इसी जद्दोजहद का जीवंत दस्तावेज है। कलावाद का नारा भो पूंजीवाद नारा हैं।

पूंजीवाद व्यवस्था के नायाब पैराकोर मध्यवर्ग से ही आते है इस व्यवस्था के दास–अनुदास और उपदास मध्यवर्ग के ही व्यक्ति होते है ये न केवल व्यवस्था को भोगते है बल्कि महिमा मंडल भी करते हैं।

पूंजीवादी राजनीति, साहित्य और कला के प्रतिष्ठित महासूर्य बड़े–बड़े मसीहा मध्यवर्ग से ही आते है। पूंजीवादी नगरी में सत्ताधी"ा कौरवों के घर वीर द्रोण, कर्ण, कृप सात्याक और भीष्म कुत्ते सा जीवन बिताते है।

मुक्तिबोध ने इस पूंजीवादी व्यक्ति–स्वातंत्रय की असलियत को अपनी रचनाओं में कई स्थानों पर अनावृत किया है। पूंजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति स्वातंत्रय का ढिंढोरा खूब पीटा जाता है। लेकिन, यह मान्यता झूठ है क्योंकि इस व्यवस्था में केवल हमें खरीदने और बेचने की, खरीदें जाने की और बेचे जाने की आजादी है। पूंजीवादी व्यवस्था को जनता अधिक दिन तक गुमराज नहीं कर सकती।

पूंजीवाद के विकास के साथ मध्य वर्ग के कुछ लोग ऊपर की ओर खिंचकर पूंजीपतियों के नजदीक पहुॅचते है और बहुत से लोग नीचे खिसकर सर्वहारा वर्ग के नजदीक पहुॅचते है। पूंजीवादी व्यवस्था के विकास का यह नियम है। इस व्यवस्था को तोड़ने वाले लोग स्वयं टूटे इसका कोई कारण नही जो अलगाव आधुनिक जीवन की सबसे ज्वलन्त समस्या है। उसका आलम्बन मुक्तिबोध के साहित्य में निम्न मध्यवर्ग है।

मुक्तिबोध ने पूंजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत तरह–तरह के समझौता करने वालो को कठोर आलाचना की है। ऐसे समझौते करने से मनुष्य की क्षमता का जो विना"ा होता है, उसका चित्रण भी इन्होंने किया है। पूंजीवादी व्यवस्था की, जिस स्तर पर भी, उन्होंने आलोचना की है, वह मूल्यवान है। दुर्भाग्य से उनकी अभिव्यक्ति की पद्धति ऐसी है कि वह साधारण पढ़े लिखे लोगों की समझ में नहीं आती है।

भारत में पूंजीवाद के स्थापना के अनन्तर भी हमारे यहॉ ग्राम क्षेत्रों में व्यापक विकास न हो पाया। ग्रामीण अंचलों में सदियों पुरानी छायाएॅ चलती रही। उधर शहरों में बसने वाले उच्च वर्गीय परिवार अभी भी सामन्ती प्रभाव छायाओं को हटा भी न पाये थे कि पूंजीवादी सभ्यता के भीतर आत्म विरोधों की अनुल्लीय खाइयों की पाटा न जा सकने

वाला कठोर अस्तित्व अपनी वास्तविक सामाजिक स्थिति बनकर सामने आया फलतः आद"ा समाज के कल्याण स्वप्न लोगों की आंखों के सामने तैरने लगे। सुखी–सरल, श्रमसिक्त, उदार स्वालम्बी, आत्म तृप्त ग्रामीण समाज ही उनके आद"ा समाज का नमुना बना।

भारतीय पूंजीपति वर्ग की उत्पत्ति वि"ाष्ट परिप्रेक्ष्य में विलम्ब से हुई थी तथा उसकी ऐतिहासिक स्थिति कमजोर थी। अतः वह कभी न तो ब्रिटि"ा काल में और न स्वतंत्रता प्राप्ति के प"चात् की पूर्णतया धर्म निरपेक्ष बुद्धिवादी अथवा भौतिकवादी द"ानों की ओर उन्मुख हुआ और न इसने इसका विस्तार से प्रतिपादित किया।

भारतीय पूंजीपति वर्ग ने सामंतवाद (सामन्ती धर्म के साथ–साथ) के विरूद्ध संघर्ष की प्रक्रिया के दौरान अपना कोई आध्यात्मिक आधार तैयार नही किया। भारतीय पूंजीवाद ब्रिटि"ा साम्राज्यवादी पूंजीवादी का गौंण फल था, अतः उसे अपने सर्वाग का विकास के पहले मौजूद सामंती तथा प्राक सामंती द"ानों को विस्थापित करने की आव"यकता न थी।

भारतीय पूंजीवाद का जन्म वि"व पूंजीवाद क पतन"ाील चरण में उस समय हुआ जब विकसित पूंजीवादी दे"ाों में भी पूंजीवादी व्यवस्था में आये सामान्य संकट के कारण सत्ताधारी पूंजीपति वर्ग जो संकट के कारण परिचित नही था उत्तरोत्तर बुद्धिवाद तथा भौतिकवादी विचारधाराओ का त्याग करता चला जा रहा था तथा धार्मिक और रहस्यवादी वि"व दृष्टियों की ओर लौट रहा था। क्लाड़ ईथरली में मुक्तिबोध तत्कालिक अन्तराष्ट्रीय युद्धवादी नीति का भारतीय संघर्ष में विरोध करते हुए उसे सम्पूर्ण मानव सभ्यता के संकट के रूप में ले लेते है। क्लाडईथरली के माध्यम से वे पूंजीवादी सभ्यता का असली चेहरा उजागर करते हुए सजग रचनाकार के नाते भारत को पा"चात्य प्रभाव के दुष्परिणामों से आगाह करते है।

समझौता में पूंजीवादी व्यक्तित्व में आदमी की यह स्थिति है वह तो म"ाीन का एक पूर्जा है। इस म"ाीन में गलत जगह हाथ आते ही कट जायेगा। आदमी उसमें फंसकर कुचल जायेगा। जैसे बैगन और व्यवस्था उन परिस्थितियों की जनक है जिसमें जीवन यापन का एकमात्र स्टैण्डर्ड यह था कि वह प"ु रूप बन जाये। ..... व्यवस्था आदमी को जानबूझकर प"ु बना रही है। .... प"ु बन जाने की उसे ट्रेनिंग दे रहो है।

मुक्तिबोध का परिवे"ा और उसमें जीता हुआ आदमी अर्द्ध–पूंजीवादी संस्कारों की जड़े बहुत गहरे तक फैली हुई है।

मुक्तिबोध की शोषित वर्ग के प्रति पक्षधरता असंदिग्ध है। उनकी कहानियों में जहॉ शोषित, उत्पीड़ित वर्ग का चित्रण मिलता है, वही शोषक वर्ग का चरित्र भी साफ उभर कर आया है। शोषक वर्ग के चरित्र को उभारने के पीछे मुक्तिबोध की मं"ाा यही है कि समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय, और शोषण` लिए जो वर्ग उत्तरदायी है। उस वर्ग के असली चेहरे को भी सामने रख दिया है।

<u>भाोध सामग्री की उपलब्धतता</u> :–

मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज के विरूद्ध अभिव्यक्ति एक साहित्य शोध है। अतः विभिन्न ग्रन्थालय प्रस्तावित शोध प्रबंध का कार्य क्षेत्र होगा ।

सामग्री विभिन्न संकलन हेतू स्त्रोत स्थल के अन्तर्गत पं.र.शु.वि.वि. रायपुर, इंदिरा कला संगीत वि.वि. खैरागढ़, गरू धासीदास केन्द्रीय वि.वि बिलासपुर के साथ शा.दि.महा. राजनांदगांव का ग्रन्थालय ,जिला ग्रन्थालय राजनांदगांव , नगरपालिका, ग्रन्थालय, जिला ग्रन्थालय राजनांदगांव विभिन्न साहित्यकारों एंव विद्धानो के व्यक्तिगत ग्रन्थालय त्रिवेणी संग्रालय राजनांदगांव, सबेरा संकेत प्रेस राजनांदगांव एवं पत्र पत्रिकाएँ आदि महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होगें ।

<u>भाोध का प्रायोजन उपादेयता</u> :–

साहित्यकार मनुष्य के इंद्रिय बोध को विकसित और परिष्कृत करता है साहित्यकार, मनुष्य का भाव बोध का संस्कार और विस्तार करता है भाव प्राण और भाव सम्पन मनुष्य के निमाण को संभव बनाता है साहित्यकार, संस्कृति का निर्माता है वह मानव आत्मा का िाल्पी है वह जीवन मे उदान्त मूल्यों की स्थापना करता है साहित्य मन का मानवीय जनवादी को मानव की मानतावादी बनाता है मार्क्सवादी मे साहित्य की क्रांतिकारी

भूमिका स्वीकार किया गया जिस प्रकार मार्क्सवादी द”र्ान का काम वि”व की व्याख्या करना मात्र ही नही बल्कि इसे बदलना भी है । ठीक यही भूमिका क्रांतिकारी साहित्य की है । साहित्य समाज को बदलने वाली साहित्यो का मार्ग द”र्ान करता है । इस की भूमिका राजनीति से बड़ी है वह समाज के आगे आगे चलने वाली म”ााल है ।

शा. दिग्विजय महा.परिसर मे मेरा निवास स्थान है एवं निवास स्थान से कुछ ही दूरी मे मुक्तिबोध का कालन्तर मे निवास स्थान था जो अब वर्तमान मे त्रिवेणी संग्रालय के नाम से जाना जाता है इसी स्थान मे मैं हमे”ाा जाते रहता था तथा इस ग्रंथालय मे स्थित साहित्यिक पुस्तकों को निहारते रहता था । मुक्तिबोध जिस स्थान मे जाया करते थे वहॉ के बुजुर्ग लोगा से मेरा सम्पर्क हुआ महा. के सेवानिवृत्त प्राध्यापक कर्मचारीगणो से मुक्तिबोध के संबंध मे बाते पूछता था । इसी कारण मेरे हृदय मे जिज्ञाज्ञा उत्सुक्ता पैदा होने लगी कि मैं मुक्तिबोध के साहित्य के अध्ययन कर शोध करने की प्रबल जाहिर की ।

अतः इसी कारण मैं अपना शोध विषय ''मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूॅजीवादी समाज की अभिव्यक्ति'' का चयन किया।

<u>भाोध का उद्दे”य</u> :–

गजानन माधव मुक्तिबोध की कविताओं पर पूर्व में अत्यधिक कार्य हो चुके किंतु उनके कथा साहित्य में बहुत ही कम कार्य हुये है। अतः उनके कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति की वर्तमान संदर्भो में प्रासंगिकता पर कार्य नहीं हुआ है। इसीलिए मैंने इस विषय पर मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति का चयन किया ।

मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के वि”लेषण करने से ज्ञात हुआ कि उनके कथा साहित्य में पूंजीवाद समाज को उन्होने घृणा रूप में देखा एवं पूंजीवादो समाज के प्रति शोषित वर्ग को संगठित होकर इस समाज का समूल नष्ट करने हेतु प्रेरित किया है । मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की समकालीन यथार्थ का विवेचन और वि”लेषण किया जाना है । कथा साहित्य में मुक्तिबोध की

अपनी एक अलग संवेदना शैली है । पूंजीवादी समाज के चरित्रो के बाहरी आचरण और भीतरी प्रतिक्रियाओं का ब्यौरा है

शोध का उद्‌दे”य समाज में उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग में खाई की मुक्तिबोध ने अपने साहित्य में परिभाषित किया तथा इन दोनों वर्गो के मध्य समतलीकरण करने की कोि”ा किया अर्थात् उच्च वर्ग (पूंजीवादी समाज) का विना”ा करके ही निम्न वर्ग अपना अधिकार प्राप्त कर सकते है जो कि वर्तमान संदर्भो में प्रासंगिकता का अध्ययन अनु”ीलन करना है ।

मुक्तिबोध के साहित्य में पूंजीवादी समाज अपनी नीति संस्कार, संस्कृति, आद”ा, इत्यादि सब कुछ छोड़कर सिर्फ अपने स्वार्थ के लिये शोषित वर्ग के उपर अत्याचार, गुनाह, साजि”ा रचकर, आर्थिक क्षति शारीरिक मानसिक पीडा दिया इस संबंध में उनके कार्य”ौली रूप को ज्ञात करना जिससे कि वर्तमान जन जागरूक होकर पूंजीवादी समाज के प्रति सचेत रहे ।

शोध का उद्‌दे”य पूंजीवाद समाज के पक्षकार, आलोचक, विचारक, कविगण, मंत्री, डॉक्टर, इंजीनियर, प्राध्यापक, पत्रकार, उद्योगपति और अपराधकर्मी के असली चेहरे मे नकाबपो”ा ओढ़े है जिससे कि वर्तमान समय में भी शोषित वर्ग संगठित होकर पूंजीवादी समाज के सहायकों का विना”ा कर सके । मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज द्वारा मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति, संस्कृति पर इसका घातक प्रभाव, शोषण को कानूनी मान्यता प्राप्त होना, शोषण चक्र इससे होने वाले पूंजी वृद्‌धि द्वारा व्यापक पैमाने पर शोषण का अवसर प्रस्तुत होना इन सब बिंदुओ में वि”लेषण किया जाना है।

मार्क्सवादी द”ान के लक्ष्य वर्ग विहिन समाज की परिकल्पना के स्वप्न को साकार मूर्त रूप देने के उद्‌दे”य से मुक्तिबोध के कथा साहित्य में कथ्य स्वभावतः पूंजीवादी शोषक समाज को गर्हित और निंदनीय चित्रित करता है। पूंजीवादी शोषक समाज के उत्पीड़न स्वरूप को पाठक के सामने उजागर करके ही इसके प्रति ग्लानि और धृणा का भाव जागृत किया जा सकता है ।

अन्त में मैं जिस महा. परिसर में निवासरत हूॅ उसके कुछ दूरी पर कालान्तर में मुक्तिबोध का निवास स्थान था तथा मैं प्रत्येक क्षण उस स्थान का निरीक्षण करता था तथा मेरे हदय में यह उत्सुकता, जिज्ञासा पैदा होने लगी कि मै भी मुक्तिबोध के साहित्य का अध्ययन कर सकॅू। अतः इसी उददे"य से मैने अपना विषय मुक्तिबोध के साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति का चुनाव किया जिससे कि वतमान में उच्चवर्ग की खोखलो नीति को उजागर करना हैं।

प्रस्तावित भाोध प्रबंध का अध्यायवार, वर्गीकरण

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति

अध्याय एक – मुक्तिबोध के कथा साहित्य का परिचय

1.1 मुक्तिबोध की कहानियॉ

1.2 मुक्तिबोध के उपन्यास –काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी

1.3 मुक्तिबोध के कथा –साहित्य का वर्गीकरण, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक,पौराणिक जासूसी आदि,

अध्याय दो– मुक्तिबोध के कथा –साहित्य की मुख्य प्रवृतियॉ

2.1 पूंजीवादी समाज का चित्रण

2.2 सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति

2.3 शोषण–प्रकिया का चित्रण

2.4 युगीन यथार्थ का चित्रण

2.5 वर्ग संर्घष का चित्रण

2.6 वर्गहीन समाज की स्थापना

2.7 रचना प्रकिया

अध्याय तृतीय –मुक्तिबोध के कथा साहित्य में पूंजीवादी समाज की अभिव्यक्ति

3.1 पूंजीपति

3.2 उधोगपति

3.3 जमीदार

3.4 सरकार,अफसर,और ,कर्मचारी

3.5 धार्मिक नेता

3.6 अन्य

अध्याय चतुर्थ –मुक्तिबोध के कथा साहित्य में सर्वहारा वर्ग की अभिव्यक्ति

4.1 किसान

4.2 मजदूर

4.3 नारी

4.4 छोटे कर्मचारी

4.5 दलित

4.6 अन्य

अध्याय पंचम –मुक्तिबोध के कथा साहित्य में वर्गहीन समाज स्थापना की अभिव्यक्ति

5.1 वर्गहीन समाज से आ”ाय

5.2 वर्ग संधर्ष

5.3 युगीन यथार्थ

5.4 जनक्रान्ति का आव्हवान

5.5 वर्गहीन–समाज स्थापना की परिकल्पना

अध्याय पश्ठम– मुक्तिबोध के कथा साहित्य की रचना प्रकिया

6.1 भाषा

6.2 शैंली

6.3 फैंटेसी

6.4 व्यंग्यात्मकता आदि

उपसंहार – हिन्दी कथा साहित्य को मुक्तिबोध का प्रदेय

कथा साहित्य –सृजन में मुक्तिबोध का प्रदेय बहुआयामी हैं कहानी में यथार्थ परक मार्म्सवादी चिन्तन को फैंटेसी ि"ाल्प प्रदान करते हुए वें एक नया आयाम उदघाटित करते है। मुक्तिबोध के पूर्व लम्बी कहानियॉ के लिए फैटेसी ि"ाल्प का प्रयोग मिथकीय एंव ऐतिहासिक तत्वों या कथ्य तत्व की सहायता से रहा हैं हिन्दी कहानी में फैटेसी ि"ाल्प के प्रर्वतन का श्रय मुक्तिबोध को है। मुक्तिबोध के कथा साहित्य चिन्तन की वि"ाष्टता यह है कि पा"चात्य मार्क्सवादी चिन्तको से प्रभावित होते हुए भी अपने चरित्र एंव स्वरूप में भारतीय है

गजानन माधव मुक्तिबोध अपनी चिन्ता परक रचना दृष्टि से सम .सामयिक युवा सृजन के आक्रो"ा का बौद्धिक शैली एंव सामाजिक तथा तार्किक पृष्ठभूमि प्रदान करते है

वे अधुनातन युवा लेखन के नयी कहानी नये ललितबोध एवं समाज सम्पृक्त सौंन्दर्य"ाास्त्र के जनक है।

परी"ाश्ट 1. आधार ग्रन्थ

2. संदर्भ ग्रन्थों की सूची

3. पत्र पत्रिकाएँ

(क) आधार ग्रंथ –

1. मुक्तिबोध रचनावली, भाग 3, जैन नेमीचंद संस्करण 1980, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
2. उपन्यास – ‘काठ का सपना’ मुक्तिबोध गजानन माधव, संस्करण 2003, ‘विपात्र’ मुक्तिबोध गजानन माधव संस्करण 2001, ‘सतह से उठता आदमी’ मुक्तिबोध गजानन माधव संस्करण 2000, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली।
3. कहानियॉ।

(ख) सहायक संदर्भ ग्रंथ

1. गजानन माधव मुक्तिबोध और उनका काव्य सिंह संजीव,संस्करण 1991, जय भारतीय प्रका”ान इलाहाबाद।
2. मुक्तिबोध रचनावली भाग–1,2,4,5 एवं 6–सं. जैन नेमीचंद, संस्करण 1980, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
3. मुक्तिबोध की रचनाओं से गुजरते हुऐ कुमार अनूप कुमार, संस्करण 1996, साहित्य भवन प्रा. लि. आगरा।
4. मुक्तिबोध की कविता– समाज शास्त्रीय अध्ययन, आहूजा मीना।
5. मुक्तिबोध, ज्ञान और संवेदना–नवल नंद कि”ाोर, संस्करण 1993, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
6. मुक्तिबोध का साहित्य विवेक और उनकी कविता– राय लल्लन, संस्करण 1993,मंथन पब्लिके”ान्स दिल्ली ।
7. मुक्तिबोध की काव्य चेतना और मूल्य संकल्प–राजपाल हुक्कुमचन्द संस्करण 1985, वाणी प्रका”ान दिल्ली।
8. मुक्तिबोध काव्य सृजन और जीवन मूल्य–व”िाष्ठ इन्दु, अन्नपूर्णाप्रका”ान कानपुर।

9. मुक्तिबोध काव्य बोध का नया परिपेक्ष्य–सिंह विरेन्द्र,संस्करण 1998, पंच”ील प्रका”ान जयपुर।

10. नये कवि : एक अध्ययन भाग–1 (अज्ञेय/मुक्तिबोध/नागार्जुन) तिवारी संतोष कुमार जवाहर पुस्तकालय मथुरा।

11. कवि मुक्तिबोध एक अध्ययन–अरोड़ा ललिता।

12. कवि मुक्तिबोध के प्रतीक और बिम्ब–चौहान चंचल,संस्कारण 1976, वाणी प्रका”ान दिल्ली

13. मुक्तिबोध का साहित्य एक अनु”ीलन–शर्मा श”ी, संस्करण 1977, इन्प्रस्थ प्रका”ान दिल्ली।

14. मुक्तिबोध की कविता में यथार्थ–शर्मा श”ी सबड़ा और सबड़ा प्रका”ान।

15. मुक्तिबोध एक अवधूत कविता–महता नरे”ा, संस्करण 1988, शान्ती प्रका”ान इलाबाद।

16. मुक्तिबोध के पात्र–खरे गणे”ा, संस्कारण 1993, शान्ती प्रका”ान इलाहाबाद।

17. पाया पत्र तुम्हारा–जैन नेमीचंद, संस्करण 1989, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।

18. जगहें और लोग– रमे”ा याज्ञिक, प्रथम संस्करण1996, पुस्तक नीड़ राजनांदगांव।

19. ग.मा. मुक्तिबोध सं.–गोतम लक्ष्मण दत्त , संस्करण 1972, विधार्थी प्रका”ान दिल्ली।

20. ग.मा. मुक्तिबोध का रचना संसार–सं. विमल गंगाप्रसाद, संस्करण 1969 सुषमा पुस्तकालय दिल्ली।

21. ग.मा. मुक्तिबाध, एक साहित्य इकाई– सं. शर्मा जगदी”ा संस्करण 972, ने”ानल पब्लिके”ान्स दिल्ली।

22. मुक्तिबोध का गद्य साहित्य–वर्मा मोतीराम, संस्करण,1973, विद्यार्थी प्रका”ान आजाद नगर दिल्ली।

23. मुक्तिबोध की काव्य– प्रकिया अ”ोक राधाकृष्ण प्रका”ान दिल्ली।

24. कवि मुक्तिबोध, एक वि”लेषण शर्मा रमे”ा सस्ता साहित्य भण्डार दिल्ली।

25. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियॉ–नामवर नवीन संस्करण 2007, लाकभारती प्रका”ान इलाहाबाद।

26. मानववाद और साहित्य–नवल कि”ोर, संस्करण 1972,राधाकृष्ण प्रका”ान दिल्ली।

27. समकालीन कहानी–दि”ाा और दृष्टि धनजय संस्कारण 1970, अभिव्यक्ति प्रका”ान इलाहाबाद।

28. हिन्दी कहानी– रचना, प्रक्रिया, यादव, राजेन्द्र यादव, ने”ानल पब्लिके”ान्स दिल्ली।

29. मार्क्स का द”ार्न भूपेन्द्र सान्याल।

30. Litreture and Maxism- E.d.F.Angels, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।

31. Realsan in Art-F. Angels राजकमल प्रका”ान दिल्ली।

32. मुक्तिबोध की काव्य दृष्टि–ऋतुपर्ण सुरे”ा, संस्करण 2004 राधाकृष्ण प्रका”ान दिल्ली।

33. मुक्तिबोध क समीक्षाई,– चक्रधर अ”ोक संस्करण 1998, राधाकृष्ण प्रका”ान दिल्ली।

34. मुक्तिबोध की कविताई– चक्रधर अ”ोक, प्रथम संस्करण 1998, राधाकृष्ण प्रका”ान दिल्ली।

35. मुक्तिबोध की कविता और विवेक,–देवतले चन्द्रकान्त, प्रथम संस्करण 2003, राधाकृष्ण प्रका”ान दिल्ली।

36. कवि कहानीकार अज्ञेय और मुक्तिबोध संवेदना और दृष्टि– सिंह भरत, प्रथम संस्करण 1998 वाणी प्रका”ान दिल्ली।

37. गग.मा.मु. व्यक्तित्व और कृतित्व– शर्मा जनक, प्रथम संस्करण 1983, पंच”ील प्रका”ान जयपुर ।

38. मुक्तिबोध आलोचना प्रक्रिया– रावत रमे”ा, प्रथम संस्कारण 1997, पंच”ील प्रका”ान जयपुर।

39. विपात्र एक सजनात्मक उपलब्धि,–सोनवाने चन्द्रभानु, प्रथम संस्कारण 1976, मनसा प्रिन्टर्स हैदराबाद।

40. लक्षित मुक्तिबोध– वर्मा मोतीराम, प्रथम संस्करण 2004, ने”ानल पब्लिके”ान्स दिल्ली।
41. समाकालीन हिन्दी कविता अज्ञेय और मुक्तिबोध–शर्मा ”ा”ी, संस्करण 1995, वाणी प्रका”ान दिल्ली।
42. निराला और मुक्तिबोध की चार लंबी कविता– नवल नन्दकि”ाोर, संस्करण 1993. राधा कृष्ण प्रका”ान दिल्ली।
43. मुक्तिबोध विचारक, कवि और कथाकार– प्रताप सुरेन्द्र, संस्करण 1978, ने”ानल पब्लिके”ान्स दिल्ली।
44. मुक्तिबोध विचार और कविता– जैन देवन्द्र कुमार, राजेन्द्र मिश्र, संस्करण 1998, तक्ष”ाला प्रका”ान दिल्ली।
45. नई कविता निराला, अज्ञेय, मुक्तिबोध– सिन्हा विद्या, प्रथम संस्करण 2003,वाणी प्रका”ान दिल्ली।
46. मुक्तिबोध का साहित्य चिन्तन – शुक्ल रमे”ा चन्द्र, संस्करण 2008, आ”ाीष प्रका”ान कानपुर।
47. मुक्तिबोध का काव्य सौष्ठव,– मुदगल ”ांकर बसंत, संस्करण 2005, चन्द्रलोक प्रका”ान।
48. मुक्तिबोधः जीवन संघर्ष – राव श्याम, संस्करण 2008, मिलिन्द प्रका”ान कानपुर।
49. नई कविता और मुक्तिबोध – रानी वर्षा, संस्करण, 2009,विनय प्रका”ान कानपुर।
50. डबरे पर सूरज का बिम्ब– देवतले चन्द्रकान्त, प्रथम संस्करण 2002, ने”ानल बुक ट्रस्ट दिल्ली।
51. आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर– मिश्र विनोद कुमार, प्रथम संस्करण 2009, संदर्भ पब्लि”ार्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली।
52. मुक्तिबोध के बहाने – वि”वे”वर । परिमल प्रका”ान इलाबाद आवास योजना आलापुर 211006
53. ग्ग.मा.मु. की दो कविताऐं– अग्रवाल वर्षा, प्रथम संस्करण 2004, विधा प्रका”ान इलाहाबाद।

54. मुक्तिबोध की कविता – वर्मा निर्मला, प्रथम संस्करण 20011, शब्द संसार दिल्ली।
55. समकालीन हिन्दी कविता एक सर्वेक्षण– सिंह तीरर्थे”वर, प्रथम संस्कारण 2006, मानसी पब्लिके”ान्स दिल्ली ।
56. जिरह–वमा श्रीकान्त, प्रथम संस्करण 1996, राष्ट्रभाषा संस्थान दिल्ली।
57. प्रेमचंद का सौन्दर्य शास्त्र– नवल नंद कि”ाोर, वाणी प्रका”ान दिल्ली ।
58. नयी कविता और अस्तित्ववाद– शर्मा रामविलास, प्रथम संस्कारण 1978, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
59. कहानी नयी कहानी– सिंह नामवार, संस्करण 2008 लोकभारतीय प्रका”ान इलाहाबाद।
60. नया साहित्य नया साहित्य शास्त्र– त्रिपाठी राधा वल्लभ, प्रथम संस्करण 2012 राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
61. कला और साहित्य चिन्तन कार्ल मार्क्स– सिंह नामवार, प्रथम संस्करण 1991, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
62. तो मैने कहा– रमे”ा याज्ञिक प्रथम संस्करण 2005, क्रान्ति प्रका”ान,राजनांदगांव।
63. कविता के नये प्रतिमान– सिंह नामवार, प्रथम संस्करण 1968, राजकमल प्रका”ान दिल्ली।
64. मुक्तिबोध और उनका साहित्य– सिंह ललन प्रसाद, जानकी प्रका”ान पटना।

65. मुक्तिबोध की कविता, प्रतिनायक के बिम्ब— शर्मा भास्कर, प्रथम संस्करण 2004, सुनिज प्रकाशन अलीगढ़ ।

66. शताब्दी की कविता— नवल नन्दकिशोर, प्रथम संस्करण 2001, प्रकाशन संस्थान दिल्ली।

67. मुक्तिबोध के प्रतीक— बिम्ब, चौहान चंचल, संस्करण 1997, वाणी प्रकाशन दिल्ली।

68. कहानी स्वरूप एवं संवेदना – यादव राजेन्द्र, प्रथम संस्करण 1968, नेशनल पब्लिकेशन दिल्ली।

69. कहानी रचना प्रक्रिया और स्वरूप— बटरोही, प्रथम संस्करण 1973, अक्षर प्रकाशन दिल्ली।

70. आधुनिक हिन्दी आलोचना— एक अध्ययन, लाल मक्खन ।

पत्र— पत्रिकाएँ

आलोचना, हंस, कल्पना, कहानीकार, प्रतीक, ज्ञानोदय, दिनमान, धर्मयुग, नयी धारा, कृति जनसाहित्य, वसुधा, पहल, साक्षात्कार, समकालीन, भारतीय साहित्य, आजकल, वागर्थ, पल, प्रतिपल, बहुवचन, साहित्य, अमृत, नया ज्ञानोदय, दस्तावेज, वीणा, जनभारती, उत्तर प्रदेश, मधुमती, कंक, मुक्तिबोध विशेषांक (रतलाम)

(निर्देशक)
डॉ. शंकरमुनि राय

प्राचार्य
शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

शोधछात्र
मुकेश कुमार टेम्भुरकर